हे मानव सीख कुछ इन जीव जंतुओं से

अखंड ज्योति नवंबर 1978, पृष्ठ 12

हे मानव सीख कुछ इन जीव जंतुओं से

एक अदालत में एक दम्पत्ति द्वारा दो अलग-अलग मुकदमे दायर हुए। पति ने पत्नी पर और पत्नी ने पति पर लांछन लगाकर परस्पर सम्बन्ध विच्छेद की अभियाचनायें प्रस्तुत की थीं। एक दूसरे पर लगाये गये अभियोग सच रहे हों या झूठ, इनसे एक बात निर्विवाद सिद्ध थी कि *पारिवारिक जीवन में जो स्नेह आत्मीयता और संवेदना अभीष्ट होती है उनमें उसका नाममात्र भी अंश नहीं था।*

जज ने जो निर्णय दिया, उसे दूसरे लोग विलक्षण कह कर संतोष कर सकते हैं लेकिन उसके भीतर छिपा विचारशीलता का दर्द ऐसा है जिसकी ओर से आँखें नहीं मूँदी जा सकतीं।

विद्वान न्यायाधीश ने सजा सुनाते हुए कहा,

"आप दोनों एक वर्ष तक चिड़ियाघर में जानवरों के बीच रहिये ताकि आप लोगों को यह ज्ञात हो जाये कि पारिवारिक जीवन किसे कहते हैं।"

पारिवारिकता वस्तुतः मनुष्य के विचारवान तथा भावनाशील होने का सबसे बड़ा उदाहरण है। यह संयम और सहिष्णुता की ऐसी पाठशाला है जहाँ से व्यक्ति तृष्णा,वासना एवं अहंता के मानवीय दुर्गुणों को दूर भगाने का अभ्यास करता है। सृष्टि का सौरभ, समाज की शान्ति सुव्यवस्था का आधार ही यह है कि मनुष्य स्वयं का जितना ध्यान रखे उतना ही दूसरों का भी । परिवार इस आदर्श के परिपालन की इकाई है।

खेद है कि आज का इन्सान इस मानवीय सद्भावना से निरन्तर वंचित होता जा रहा है जबकि अशिक्षित, उद्दंड और स्वार्थी समझे जाने वाले इतर जीवों में ये भावनायें अत्यन्त गहराई तक देखने को मिलती हैं। कुछ जीवों में तो स्नेहपूर्ण आत्मदान की ऐसी सजीव परंपराएं देखने को मिलती हैं कि हृदय छलक उठता है, दम्भी मनुष्य का सिर लज्जा से झुक जाता है।

डॉ इराउर्फट ने अंटार्कटिक प्रदेश की यात्राओं के जो रोचक वर्णन प्रस्तुत किये हैं उनमें यह प्रसंग बड़ी मार्मिकता के साथ उभारा गया

है। उन्होंने पेन्गुइन पक्षी के पारिवारिक सौहार्द्र का चित्रण करते हुए लिखा है:

पेन्गुइन समुद्र में रहते हैं। दक्षिणी ध्रुव प्रदेश होने के कारण यहाँ समुद्र 8-8 फुट मोटी बर्फ की चादरों से ढका रहता है। पेन्गुइन उसमें 30 मील प्रति घंटे की गति से फिसल कर चल लेते हैं। समुद्र में उन्हें कीड़े-मकोड़े आदि से जो कुछ मिल जाता है उसी से वे अपना उदर पोषण करते रहते हैं। अण्डे देने और बच्चे पालने के लिए यह पक्षी गोल पत्थरों से एक विलक्षण बनाते हैं। जिसे "रुकरी" कहा जाता है। मादा को जब भी अण्डे देने होते हैं वह इसी रुकरी में चली आती है। आहार व्यवस्था कठिन होने के कारण इस प्रसव काल के लिए संग्रह सम्भव नहीं हो पाता। प्रसव के बाद मादा को न केवल क्षुधा सताती है बल्कि शरीर में निर्बलता भी आ जाती है। यह स्थिति कब तक रहेगी नर पेन्गुइन को उसका अनुमान रहता है। वह ठीक समय पर मादा के पास पहुँच जाता है। जिस समय परिवार का कोई भी सदस्य आता है तो मेजवान पेन्गुइन अपने स्थान से उछल कर आगे बढ़ता है और चोंच और

गर्दन हिलाता हुआ तथा ग ग ग ग ग उच्चारण करते हुई भाव विभोर होकर उसका स्वागत करता है।

पेन्गुइन को कई बार 6 सप्ताह तक बिना आहार अपने बच्चों के पोषण और सुरक्षा में बिताना पड़ता है इतने दिनों में शारीरिक स्थिति कितनी चिन्ताजनक हो जाती होगी इसका अनुमान सप्ताह में एक भी दिन निराहार न रहने वाला मनुष्य उसे भली-भांति अनुभव कर सकता है।

इसका अर्थ यह हुआ कि जीव- जन्तुओं में कई गुनी अधिक सहिष्णुता हुई जबकि होना इससे उलटा चाहिए। विद्वान न्यायाधीश का इस निर्णय के पीछे यही मन्तव्य रहा है।

यदि मनुष्य स्वयं विचार नहीं कर सकता तो कम से कम वह अपने इन छोटे/तुच्छ कहे जाने वाले भाइयों से तो सीख ही सकता है।

अखंड ज्योति नवंबर 1978, पृष्ठ 12